SHODHASAMHITA
शोधसंहिता
ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

'वैश्विक आतंकवाद की चुनौतियां'

डॉ. बलबीर सिंह

सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),

लाडनूं, नागौर (राजस्थान), balbeerscharan29@gmail.com

'सारांश'

आतंकवाद की एक परिभाषा नहीं है जो सार्वभौमिक रूप से सहमत है। सामान्य शब्दों में, किसी विशेष लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए धमकियों या हिंसा के उपयोग को आतंकवाद कहा जाता है। आतंकवाद का गठन करने वाली कानूनी परिभाषाएँ देश से अलग–अलग होती हैं। पिछली सदी में, दुनिया भर आतंकवाद के मुद्दों में वृद्धि हुई है इस वैश्विक समस्या ने न केवल राष्ट्रों की राजनीति के संबंधों को बाधित किया है अपितु अर्थव्यवस्था, समाज, संस्कृति, सृजनशीलता आदि को भी प्रभावित किया है। वैश्विक आतंकवाद सभी राष्ट्रों के समक्ष एक के उसे नासूर की भांति है जो वृद्धि तो करता जा रहा है लेकिन उसके रोकथाम के कोई कारगर उपाय सामने नहीं आए हैं। आज भी आतंकवादी घटनाओं के चलते ही राष्ट्रों के मध्य आपसी अविश्वास एवं सहयोग की भावना कम हुई है और राष्ट्र आतंकवाद के भय से सही को सही और गलत को गलत कहने में संकुचित हो रहे हैं। धर्मांधता एवं सांप्रदायिकता की प्रवृत्ति को भी बढ़ावा देने में आतंकवादी संगठन प्रयासरत रहते हैं जिसके कारण सामाजिक समरसता की प्रवृत्ति भी बाधित होती है तथा व्यापार, सृजनशीलता, सह–अस्तित्व, पारस्परिक सौहार्द और शांति के वातावरण को इस वैश्विक समस्या ने काफी प्रभावित किया है। इसका कारगर उपाय खोजना न केवल अंतरराष्ट्रीय संगठनों एवं संस्थाओं का दायित्व है, बल्कि प्रत्येक राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता का पालन करते हुए इस समस्या के हल हेतु अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करें।

मुख्य शब्द– राष्ट्रीय हित, कूटनीति, प्रभुत्व की राजनीति, शक्ति–संघर्ष, राष्ट्रीय–शक्ति, हिंसात्मक–कार्यवाही, अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता, शस्त्रीकरण, पंच–निर्णय, विश्व–प्रभुत्व, वैश्विक अनैतिकता, सामूहिक सुरक्षा, अमानवीय

कृत्य, राजनीतिक अर्थव्यवस्था, सह–अस्तित्व, द्विपक्षीय विवाद, सांप्रदायिक–सौहार्द, अंतरराष्ट्रीय कानून, विश्वबंधुत्व।

अध्ययन का उद्देश्य –

- आतंकवाद की अवधारणा को स्पष्ट करना।
- आतंकवाद एक वैश्विक समस्या है, इस पक्ष को उजागर करना।

- आतंकवाद के उत्तरदाई कारकों का विश्लेषण करना।
- आतंकवाद के प्रभाव पर प्रकाश डालना।
- आतंकवाद किसी भी सूरत में उचित नहीं है इसकी विवेचना करना।
- वर्तमान में उभरती आतंकवादी घटनाओं को प्रकाश में लाना।
- इन घटनाओं के लिए उत्तरदाई कारणों की विवेचना करना।
- आतंकवाद के प्रति उत्पन्न पूर्वाग्रहों को लोगों के ध्यान में लाना।
- आतंकवाद की रोकथाम के कारगर उपायों पर बल देना।
- आतंकवाद के बढ़ते खतरों को चिन्हित करना।
- वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में आतंकवाद की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना।

अध्ययन पद्धति–

वर्तमान समय में आतंकवाद की चुनौती एवं उसके वैश्विक स्वरूप विषय पर अध्ययन एवं विश्लेषण करने के लिए तुलनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति को अपनाया गया है। इसके अंतर्गत विषय से संबंधित विचारकों के चिंतन एवं दर्शन का तुलनात्मक तथा समीक्षात्मक विधि से तलरूस्पर्शी अध्ययन किया गया है। इस वैश्विक समस्या के स्वरूप को स्पष्ट करने के साथ–साथ उभरती नूतन प्रवृत्तियों के बारे में विश्लेषण करने की प्रक्रिया में उपलब्ध तथ्यों का संग्रहण करके उनका अवलोकन करने का एक बौद्धिक प्रयास है।

प्रस्तावना–

अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद एक ऐसा शब्द है जिसका स्वरूप नकारात्मक है, लेकिन इसने राष्ट्रों के आपसी संबंधों, सामाजिक वातावरण और व्यक्ति की सोच को प्रभावित किया है। आज भी संपूर्ण विश्व इस भयानक विभिस्शिका से प्रभावित है। इसके स्वरूप अलग अलग है राष्ट्रीय आतंकवाद और अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद लेकिन दोनों ने ही मानवता को कुंठित किया है, प्रभावित किया है और आपसी प्रेम सौहार्द सह–अस्तित्व, भाईचारा आदि को प्रभावित कर वैमनस्य, घृणा, भय, अराजकता व अविश्वास के वातावरण को जन्म दिया है। इस अवधारणा ने राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज, संस्कृति, मानवीय–मूल्य, नैतिकता आदि के अच्छे वातावरण को भी बाधित किया है। आतंकवाद न केवल एक राष्ट्र की समस्या है, और एक समाज की

समस्या है अपितु यह वर्तमान समय में वैश्विक समस्या बन गई है जिसने प्रत्येक राष्ट्र को प्रभावित किया है। आज यह एक भयानक चुनौती के रूप में है जिसका निराकरण करना न केवल आवश्यक है बल्कि मानवीयता एवं मानव जगत को बचाए रखने के लिए अति अपरिहार्य है। इस वैश्विक समस्या के बढ़ते प्रभाव को कम करना क्यों आवश्यक है ?और इसे चुनौती का निपटारा किन सकारात्मक प्रयासों से किया जा सकता है इस विषय पर विवेचन एवं विश्लेषण करना आवश्यक है। इस शोध पत्र को आधार मानते हुए इस वैश्विक चुनौती के खतरों को इंगित करते हुए इसके विश्वसनीय निदान के उपाय पर बल देने का बौद्धिक प्रयास है।

वैश्विक आतंकवाद से अभिप्राय :

आतंकवाद सामान्य लोगों के बीच आतंक बनाने के लिए लोगों के समूह द्वारा अवैध, हिंसक एवं बाध्यकारी साधन अपनाए जाते हैं। इसका प्रभाव एवं जड़े पूरी दुनिया में फैली हुई है और यह एक बहुत ही बड़ी वैश्विक समस्या बन गई है। वैश्विक आतंकवाद में कुछ राष्ट्रो द्वारा अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए उसे हिंसा एवं अनैतिक तरीकों को अपनाकर घटनाओं को अंजाम दिया जाता है। इसमें मुख्य रूप से मानव बम का प्रयोग, राजनेताओं का अपहरण, राष्ट्र के सर्वोच्च नेतृत्व को अपने हित के अनुरूप व्यवहार करवाने हेतु बाध्य करने के लिए हिंसक हमले करवाना। कुछ विचारको नें आतंकवाद की परिभाषाएं भी दी है।

- जी. श्वार्जनबर्गर के अनुसार ''एक आतंकवादी को उसके तात्कालिक लक्ष्य के संदर्भ में सर्वश्रेष्ठ तरीके से परिभाषित किया जा सकता है। यह लक्ष्य है भय पैदा करने के उद्देश्य से शक्ति का प्रयोग करना और इस प्रकार अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना।''

- ब्रियां एम. जेन्किस के अनुसार ''हिंसा की धमकी, व्यक्तिगत हिंसात्मक कृत्य और लोगों को आतंकित करने के उद्देश्य से हिंसा का विचार आतंकवाद है।''

- पाल विलकिंसन ने वैश्विक आतंकवाद को परिभाषित करते हुए बतलाया कि आतंकवाद के तीन मूल तत्व होते हैं, प्रथम–आतंकवाद को व्यवस्थित शस्त्र के रूप में प्रयोग करने का निर्णय। द्वितीय–सामान्य से अधिक हिंसा की धमकी या हिंसक कृत्य। तृतीय–तात्कालिक शिकार और व्यापक राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय जनमत पर इस हिंसा का प्रभाव।

- प्रो. कारपेत्स ने वैश्विक आतंकवाद को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''आतंकवाद हत्या, हिंसा प्रयोग, फिरौती या अन्य मांगों के लिए मनुष्य को बंधक बनाने और स्वतंत्रता का बलात् अपहरण करने के लिए विशेष संगठन या गुट बनाने की ओर लक्षित अंतरराष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय रूप से अभिप्रेरित घटनाओं को एवं गतिविधियों को अंजाम देना है। आतंकवाद का मतलब इमारतों का विनाश, लूटमार और हत्या करना है।''

अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद की अधिक स्पष्ट परिभाषा यह हो सकती है कि अंतरराष्ट्रीय कानून के एक पात्र (राष्ट्र) द्वारा दूसरे पात्र (राष्ट्र) के विरुद्ध निष्पादित आतंकवादी कृत्य। अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करने वाली आतंकवादी घटनाओं को अंतरराष्ट्रीय कानून के एवं अंतर्राष्ट्रीय चिंतन के क्षेत्र में निम्न बिंदुओं के आधार पर विचारणीय माना जा सकता है–

- अंतरराष्ट्रीय कानून के पात्रों द्वारा निष्पादित होने के कारण।
- अंतरराष्ट्रीय संबंधों में उत्पन्न खतरे के कारण।
- अंतरराष्ट्रीय स्वार्थ निहित होने के कारण।
- किसी विशेष आतंकवादी कृत्य से सामाजिक खतरे, मानवीयता के खतरे एवं विशव अशांति बढ़ाए जाने के कारण।

वैश्विक आतंकवाद के उद्भव के आधार :

विश्व जगत में आतंकवाद के उपजे वातावरण के लिए बहु–आयामी विषमता, आर्थिक असंतुलन, सामाजिक असंतोष, बेरोजगारी, क्षेत्रीय समानताएं, आकांक्षाओं की अनापूर्ति, जातीय एवं सांप्रदायिक वर्चस्ववादिता, अवैज्ञानिकता, क्षेत्रीय एवं धार्मिक कट्टरता, तकनीकी एवं कौशल का नकारात्मक प्रयोग, सैनिक तानाशाही, उग्रवाद एवं फासीवाद के प्रभाव में वृद्धि जैसे कारक आतंकवाद को बढ़ावा देने में प्रमुख आधार माने जा सकते हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में आतंकवाद की सबसे बड़ी चुनौती आतंकवादी संगठनों के पास अत्याधुनिक हथियारों का होना है। उनके पास नाभिकीय हथियार, रासायनिक हथियार और जैविक हथियार के काफी जखीरे उपलब्ध हैं। वर्तमान में राष्ट्रों द्वारा महामारी के जीवन एवं विषाणु प्रयोगशाला में तैयार करके उनका उपयोग राष्ट्रों में आतंक हिंसा एवं भय का माहौल पैदा आर्थिक स्थिति को प्रभावित करना एवं जनमानस को नुकसान पहुंचाना भी मुख्य साधन रहा है। आतंकवाद की चुनौती ने केवल एक राष्ट्र की बल्कि दुनिया के संपूर्ण राष्ट्रों की चुनौती है।

आतंकवाद के दुष्परिणाम –

- भय स्थिरता एवं अराजकता के वातावरण में वृद्धि।
- राष्ट्रों के आर्थिक एवं व्यापारिक सहयोग की भावना पर नकारात्मक प्रभाव।
- जनमानस में भय असंतोष एवं अस्थिरता की परिस्थितियों का जन्म।
- राष्ट्रों के मध्य आपसी विवादों में अभिवृद्धि।

- शिक्षा तकनीकी विकास और राष्ट्रों के विकास जैसे आयामों में गिरावट
- विश्वशांति को बाधित करना।
- अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की कार्यशैली पर नकारात्मक प्रभाव।
- कट्टरतावाद, सांप्रदायिकतावाद और क्षेत्रवाद जैसी बुराइयों में अभिवृद्धि।

आतंकवाद के रूप –

आतंकवाद की अभिव्यक्ति कई रूपों में दिखलाई देती है आतंकवाद का पहला रूप है मानव बम– मानव बम एक ऐसा हथियार है जिसके अंतर्गत कोई भी मनुष्य अपनी इच्छा से अपनी जीवन लीला समाप्त करने को तैयार हो जाता है और किसी भी विस्फोटक हथियार अथवा आर. डी.एक्स. की कुछ मात्रा बेल्ट में भरकर अपने कमर में बांध लेता है और उसके साथ जुड़ी हुई बैटरी के मात्र छोटे से बटन को दबाकर विस्फोट को अंजाम दे देता है। विभिन्न आतंकवादी संगठन इस आतंकवाद के रूप को अपनाकर किसी स्थान विशेष या किसी व्यक्ति विशेष को निशाना बना कर अपने लक्ष्य को अनैतिक तरीके से प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। भारतीय पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या करने के लिए इसी प्रकार के अनैतिक के प्रयास को अंजाम दिया गया था। आतंकवाद का दूसरा रूप है–वित्तपोषित आतंकवाद। आतंकवाद के इस स्वरूप के अंतर्गत किसी भी समाज अथवा समुदाय को आर्थिक सहायता प्रदान कर उनकी मनोवृत्ति परिवर्तित करने का प्रयास किया जाता है और उन्हें आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देने के लिए तैयार किया जाता है।आतंकवाद का तीसरा रूप है –राज्य प्रायोजित आतंकवाद। इसके अंतर्गत कुछ राष्ट्र प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विश्व में बढ़ती आतंकवादी घटनाओं एवं प्रवृत्तियों को शह एवं प्रश्रय प्रदान करते हैं

आतंकवादी संगठन आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं विचारात्मक लक्ष्यों की क्षतिपूर्ति के लिए गैर–सैनिक अर्थात् नागरिकों की सुरक्षा को भी निशाना बनाते हैं। गैर–राज्य कारकों द्वारा किए गए राजनीतिक वैचारिक या धार्मिक हिंसा को भी आतंकवाद की श्रेणी का ही समझा जाता है। अब इसके तहत गैर कानूनी हिंसा एवं युद्ध को भी शामिल कर लिया गया है।

आतंकवाद शब्द की उत्पत्ति आतंक शब्द से है। आतंकवाद ऐसे कार्यों को कहते हैं, जिसे किसी प्रकार का आतंक फैलाने के उद्देश्य से किया जाता है। इस प्रकार के कार्यों को जो करते हैं उन्हें आतंकवादी कहा जाता है।

आज आतंकवाद एक ऐसी वैश्विक समस्या का रूप धारण कर चुका है, जिसकी आग में सारा विश्व जल रहा है। आज कोई भी देश यह दावा नहीं कर सकता कि उसकी सुरक्षा व्यवस्था में कोई कमी नहीं है और वह आतंकवाद से पूरी तरह मुक्त है। सच तो यह है कि आज यह कोई नहीं जानता कि आतंकवाद का

अगला निशाना कौन एवं किस रूप में होगा। हिंसा के द्वारा जनमानस में भय या 'आतंकवाद पैदा कर उद्देश्यों को पूरा करना ही आतंकवाद है। वैसे तो आतंकवाद कई प्रकार के हैं, परन्तु इनमें से तीन ऐसे हैं जिनसे पूरी दुनिया त्रस्त है राजनीतिक, सामाजिक या गैर राजनीतिक एवं धार्मिक कट्टरता से संबंधित आतंकवाद। श्रीलंका में लिट्टे समर्थकों एवं अफगानिस्तान में तालिबान संगठनों की गतिविधियाँ राजनीतिक आतंकवाद के उदाहरण हैं।

जम्मू कश्मीर में अलगाववादी गुटों द्वारा किए गए अपराधिक कृत्य भी राजनीतिक आतंकवाद के ही उदाहरण है। अल–कायदा, लश्कर–ए–तैयबा, जैश–ए–मोहम्मद जैसे संगठन धार्मिक कट्टरता की भावना से आपराधिक कृत्यों को अंजाम देते हैं। ऐसे आतंकवाद को धार्मिक कट्टरता की श्रेणी में रखा जाता है। अपनी सामाजिक स्थिति या अन्य कारणों से उत्पन्न सामाजिक क्रांतिकारी विद्रोह को गैर राजनीतिक श्रेणी में रखा जाता है। भारत में नक्सलवाद गैर–राजनीतिक आतंकवाद का उदाहरण हैं।

आतंकवादी हमेशा आतंक फैलाने के नए–नए तरीके आजमाते रहते हैं। भीड़ भरे स्थानों, रेल बसों इत्यादि में बम विस्फोट करना, रेलवे दुर्घटना करवाने के लिए रलवे लाइनों की पटरियाँ उखाड़ देना, वायुयानों का अपहरण कर लेना निर्दोष लोगों या राजनीतिज्ञों को बंदी बना लेना, बैंक डकैती करना आदि कुछ ऐसी आतंकवादी गतिविधियाँ हैं जिनमें पूरा विश्व पिछले कुछ दशकों से त्रस्त हैं। आज लगभग पूरा विश्व आतंकवाद की चपेट में हैं एवं किसी न किसी तरह से पीड़ित हैं।

पिछले एक दशक में पूरे विश्व में आतंकवादी घटनाओं में बढ़ोत्तरी हुई है। 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका के न्यूयॉर्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर एवं 26 नवम्बर 2008 को मुंबई में हुआ आतंकी हमला आतंकवाद के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है। हाल ही में अफगानिस्तान में आतंकवादी संगठन तालिबान द्वारा अनैतिक एवं अमानवीय तरीकों को अपनाकर शासन सत्ता हथियाने का प्रयास किया और हिंसात्मक कार्रवाई को अंजाम देकर जबरन मारकाट की नीति का सहारा लेकर शासन सत्ता अपने हाथ में ले ली वैसे तो आज लगभग पूरा विश्व ही आतंकवाद की चपेट में हैं किन्तु भारत दुनियाभर में आतंकवाद से सर्वाधिक त्रस्त पड़ोसी देश पाकिस्तान से है।

आतंकवाद वैश्विक समस्या के रूप में :

आज आतंकवाद केवल भारत की समस्या नहीं वरन् यह विश्व पटल पर एक गम्भीर समस्या के रूप में देखा जा रहा है। विश्व का आज तक का सबसे बड़ा आतंकवादी हमला अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर का माना जाता है। 11 सितम्बर, 2001 में, विश्व के सबसे शक्तिशाली देश के सबसे ऊँची इमारत पर ओसामा बिन लादेन ने आतंकवादी हमला करवाया था, जिसके चलते लाखों का नुकसान हुआ एवं हजारों–लाखों लोग मलबे के नीचे दब कर मर गए थे। अमेरिका ने अपने सबसे बड़े दुश्मन को बड़े फिल्मी तरीके से मारा था। ओसामा बिन लादेन को मारने के लिए अमेरिका ने एक ऑपरेशन चलाया जिसके तहत वह पाकिस्तान

में घुसकर उस मार गिराया गया था। अतः आतंकवाद अपने सबसे क्रूरतम रूप में विश्व को हानि पहुँचा रहा है, इसकी समस्या का निदान तभी हो सकता है, जब सभी राष्ट्र मिलकर इसे पूरी तरह कुचल देने का संकल्प लें, और इसके लिए सही दिशा में कार्य करें।आतंकवाद का मुख्य उद्देश्य सामाजिक एवं राजनैतिक तंत्र को आहत किया है। आतंकवाद का प्रभाव सबसे अधिक आम जनता को होता है। आतंकवादी समूह देश की सरकार को बनाने के लिए ये सब करते हैं, लेकिन जिस पर वे ये जुल्म लगाते हैं वे उन्हीं के भाई बहन होते हैं, मासूम होते हैं, जिनका सरकार, आतंकवाद से कोई लेना देना नहीं होता है, एक बार ऐसा कुछ देखने के बाद इन्सान के मन में जीवनभर के लिए डर पैदा हो जाता है, वे घर से निकलने तक में हिचकता है, माँ को डर रहता है, कि उसका बच्चा घर वापस आएगा कि नहीं।

आतंकवाद से लोगों में भय व्याप्त हो जाता है। वे अपने राज्य, देश में स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं। आतंकवाद के सामने कई बार सरकार भी कमजोर दिखाई देती है, जिससे लोगों का सरकार पर से भरोसा उठता जा रहा है। आतंकवाद को मुद्दा बनाकर किसी भी सरकार को गिराया जा सकता है। आतंकवाद के चलते लाखों की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है, हजारों, लाखों मासूमों की जान चली जाती है। जीव–जंतु मार जाते हैं। मानव जाति एक दूसरे पर भरोसा करने में डरते हैं। एक आंतकवदी गतिविधि देखने के बाद दूसरा आतंकवादी भी पैदा होने लगता है। इस प्रकार आतंकवाद देश, समाज के लिए अत्यंत घातक घटक के रूप में माना जा सकता है। आतंकवाद एक प्रमुख वैश्विक चुनौती है, जिसका प्रभाव संघर्षरत क्षेत्रों से लेकर दूरदराज के शहरों की गलियों तक नजर आता है। आतंकवाद की पुरानी संरचनाएं बनी हुई है, जिससे वे राष्ट्र जो नैतिक तरीकों से अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते हैं, वे आज एक राज्यनीति एवं अपने राज्य के हित को पूरा करने के लिए इसे एक साधन के रूप में प्रयुक्त कर रहे हैं। वर्तमान में आतंकवाद के कई रूप सामने रहे हैं, वैश्विक आतंकवाद, फ्रेंचाइजी आतंकवाद, ग्रह जनित आतंकवाद तथा भर्ती एवं प्रचार–प्रसार करके साइबर क्राइम को बढ़ावा देना भी वर्तमान समय में आतंकवाद का एक रूप है। आतंकवाद को रोकने के लिए कारगर उपायों की आवश्यकता है।

- 'आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रों के साथ व्यापारिक एवं आर्थिक सहयोग कम कर देना चाहिए।
- उन राष्ट्रोंको अलग–थलग कर देना चाहिए जो आतंकवाद का समर्थन करते हैं, आतंकवादी घटनाओं को प्रायोजित करते हैं और मानवीयता के मूल्यों को आंच पहुंचाते हैं।
- अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद की चुनौती से निपटने के लिए हमें अंतरराष्ट्रीय कानूनों की रूपरेखा को भी पुनर्गठित करने की आवश्यकता है।
- अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद को हमारी प्राचीन धारणाएं, प्राचीन संस्कृति आदि को पुनर्जीवित करके भी समाप्त किया जा सकता है।

- आतंकवादियों को नवीनतम हथियारों की आपूर्ति रोकने, आतंकियों की आवाजाही में व्यवधान उत्पन्न करने और उनको वित्तीय सहायता रोकने के कारगर उपाय ढूंढने चाहिए।

- साइबर आतंकवाद को रोकने के लिए हमें सामूहिक प्रयासों द्वारा इंटरनेट सोशल मीडिया आदि को सुरक्षित करने का भी प्रयास करना चाहिए।

- हमें अलगाववाद व हिंसात्मक के विरुद्ध होकर सामाजिक एकजुटता, सांप्रदायिक सौहार्द और विश्वकल्याण की भावना पर बल देना चाहिए। आतंकवाद और धर्म के बीच जो कट्टरता की भावना है उसे समाप्त करने के लिए आपसी सौहार्द और एकजुटता की आवश्यकता पर जोर देना चाहिए।

निष्कर्ष–

आतंकवाद की समस्या ने न केवल विश्व शांति को बाधित किया है, अपितु राष्ट्रों के मध्य सह–अस्तित्व, पारस्परिक सौहार्द, आपसी विश्वास एवं आर्थिक के सहयोग के मार्ग को भी अवरुद्ध किया है। वैश्विक आतंकवाद का मूल कारण कुछ राष्ट्रों द्वारा अपने राष्ट्रीय हितों को शांतिपूर्ण तरीकों से पूरा न कर पाने के कारण अनैतिक एवं अमानवीय हिंसात्मक तरीकों को अपनाकर राष्ट्रीय हित पूरा करने का एक अनैतिक तरीका अपनाना है। इस समस्या ने न केवल राष्ट्रों के मध्य दूरियां एवं अविश्वास को बढ़ावा दिया है अपितु कई अनेक नई समस्याओं को भी जन्म दिया है, जिसके कारण राष्ट्रों के आपसी संबंधों के साथ–साथ अंतरराष्ट्रीय संगठन एवं संस्थाओं की कार्य पद्धति एवं उनकी प्रभावशीलता को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित किया। इस समस्या के विश्वसनीय निदान हेतु राष्ट्रों के मध्य एकजुटता, एकरूपता एवं सामूहिक सुरक्षा की भावना को बढ़ावा दिया जाए और राष्ट्र अपने निहित स्वार्थों को गौण मानकर विश्व में शांति एवं मानवता की रक्षा जैसे आयामों को महत्वपूर्ण माने और इस दिशा में कारगर प्रयास करें तो वर्तमान मानव जगत को इससे विभीषिका से ऊपर आ जा सकता है। इस समस्या के समाधान से राष्ट्रों के मध्य आपसी सौहार्द, विश्वास, प्रेम एवं सहयोग की भावना को बढ़ावा मिलेगा। राष्ट्र द्विपक्षीय विवादों एवं अपने राष्ट्रीय हितों को कुछ सीमा तक गौण मानकर इस समस्या के निदान हेतु अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. फैरिक, डेविड, अन्तर्राष्ट्रीय कानून में आतंकवाद : आतंकवाद की परिभाषा व उसके निरोध पर अनुचिन्तन, ब्रूसेल्स विश्वविद्यालय के संस्करण, 1974।
2. कार्लटन, डेविट और शार्फ कारलो, अन्तर्राष्ट्रीय और विश्व सुरक्षा, क्रोम हेल्म, लन्दन, 1975।
3. फडिया, बी.एल., अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. फडिया, कुलदीप, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, साहित्य पब्लिकेशन्स, आगरा।
5. जैन, बी.एम., अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।